श्री शबरीकुंभ समारोह : एक विहंगावलोकन

पू. श्री मोरारीबापू के शुभाशीर्वाद तथा मार्गदर्शन के अनुसार डांग जिले के शबरीधाम क्षेत्र में होने जा रही शबरीकुंभ मेले की तैयारी पूरे जोरों के साथ चल रही है। सभी कार्यकर्ता और स्वयंसेवकों के परिश्रम से यह तैयारी अंतिम चरण में पहुँच गयी है। इस समिति में सारे भारतवर्ष से सदस्यों का चयन किया गया है। समिति के अध्यक्ष पद पर सूरत के श्री कैलाशजी शर्मा का नाम सुनिश्चित किया गया है। समिति के महामंत्री पद पर डांग के आहवा नगर के श्री किशोरभाई गावित और सह महामंत्री पद पर उदयपुर, राजस्थान के श्री सुरेशजी कुलकर्णी का चयन किया गया है।

दि. 11-12-13, फरवरी को कुंभस्नान, कुंभपूजन, यज्ञ, धर्मसभा और रात्रि में विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम होंगे। धर्मसभा में मार्गदर्शन एवं आर्शीवचन हेतु संत श्री पू. जगद्‌गुरु शंकराचार्यजी वासुदेवानंद सरस्वतीजी महाराज (ज्योतिर्मठ), पू. स्वामी सत्यमित्रानंदजी महाराज, पू. संत श्री मोरारीबापू, पू. डॉ. प्रणवजी पंड्या (गायत्री परिवार), पू. अवधेशानंदगिरिजी महाराज, हरिद्वार, पू. साध्वी ऋतुंभराजी,
पू. साध्वी शिवासरस्वतीजी, कोटा, राजस्थान, पू. जगत्‌गुरु शंकराचार्यजी श्री विद्यानृसिंहभारती महाराज (करवीरपीठ), पू. अविचलदासजी महाराज, आचार्य किशोरजी व्यास एवम् पू. आशाराम बापू (गुजरात) पधारेंगे।

शबरीकुंभ क्यों?

- सामाजिक समरसता और वनवासी एवम् वंचित समाज में व्यापक जागृति हेतु
- वनवासी संस्कृति और अस्मिता के प्रोत्साहन हेतु
- वनवासियों के विकास हेतु
- राष्ट्रीय एकात्मता का दर्शन करने और पुष्ट करने हेतु

<u>शबरीकुंभ किस तरह</u>

- समग्र देश से सभी जनजातियों और अनुसूचित जातियों का प्रतिनिधित्व
- देशभर से विशाल संख्या में लोगों की उपस्थिति
- कुंभ के प्रत्येक दर्शनार्थी के लिये भोजन, पानी, स्वच्छता तथा चिकित्सा की व्यवस्था
- कुंभ से पहले हजारों वनवासियों से व्यक्तिगत संपर्क

पारंपरिक कलाओं का प्रदर्शन :

शबरीकुंभ समारोह में भारत के सभी राज्यों से वनवासी बंधुओं का सहभाग होनेवाला है। वनवासी बंधु अपनी पारंपरिक कलाओं का, चित्रकला तथा नृत्यकला का कलात्मक प्रदर्शन करेंगे। इस समारोह में एक भव्य प्रदर्शनी का आयोजन किया जायेगा। इस प्रदर्शनी में स्वातंत्र संग्राम में सहभागी हुए वनवासी

क्रांतिकारी तथा संतों के जीवन दर्शन पर आधारित चित्र होंगे। धर्म, संस्कृति और राष्ट्र के लिये आजीवन कार्य करनेवाले वनवासी बंधुओं के जीवन का परिचय इस प्रदर्शनी में दिया जायेगा।

प्रदर्शनी में 3 विभाग रहेंगे :

स्वावलंबन : देशभर में वनवासी समाज में स्वालंबन हेतु किये गये सफल प्रयोगों का निदर्शन जैसे, जाट्रोफा वनवस्पति से डीजल बनाना, बैल संचालित ट्रेक्टर ऐसे स्वरोजगार प्रदर्शनों के 50 स्टॉल होंगे।

स्वाभिमान : रामायण में राम के साथ रहे जटायु, केवट, जामवंत आदि पात्रों की चित्रमय झलकियाँ। स्वातंत्र्य संग्राम में शामिल हुये लगभग 300 वनवासी क्रान्तिकारियों का एक साथ परिचय।

जागरण : राष्ट्रीय समस्याओं के प्रति वनवासी बंधुओं में चेतना जगाना।

शबरीकुंभ समारोह में सहभागी होने के लिये हर रोज लाख से ज्यादा श्रध्दालु आयेंगे। विभिन्न स्थानों से 40 पदयात्रायें आयेंगी। वे श्रद्धालु पंपा सरोवर में स्नान करेंगे और शबरीधाम के दर्शन करने जायेंगे। इतनी बडी संख्या में शबरीधाम आनेवाले श्रद्धालुओं की सुविधा के हेतु नासिक, नवापुर, बारडोली, सूरत, आह्वा से सार्वजनिक यातायात सेवा से शबरीधाम पहुंचने की सुविधा की गई है इसके उपरांत अन्य प्रांतों से भी बड़ी संख्या में श्रद्धालु सहभागी होंगे।

शबरीधाम में आनेवाले श्रद्धालुओं के लिये भोजन की व्यवस्था, आरोग्य सेवा का पूरा बंदोबस्त किया गया है। परिसर में 9 जगह पर रसोई घर, 40 जगह पर निवास व्यवस्था, 3 जगह पर अस्पताल तथा हर नगर में ओ.पी.डी. सेवा की व्यवस्था है। भोजन वितरण हेतु बगदाणा, सौराष्ट्र के आश्रम से मदद प्राप्त हुई है।

पंपा सरोवर से आसपास के सभी गाँवों में स्वच्छ पेयजल की व्यवस्था हो गई है। पूर्णा नदी पर 24 चेक डेम (तटबंध) बना दिये गये हैं। जिसके कारण कुभ के बाद स्थानीय किसान दो फसलें ले सकेंगे। पानी की व्यवस्था होने के कारण प्रवासी पक्षियों का भी दर्शन हो रहा है।

शबरीकुंभ हेतु पंपा सरोवर पर लगभग ढाई किलोमीटर लंबा स्नानघाट बनाया गया है। तीन दिन चलनेवाले कुंभ मेले के हेतु पानी, बिजली, रस्ते और अन्य सुविधाओं से पूर्ण अस्थाई नगरों की रचना की गई है। इस भव्य शबरीकुंभ में श्रद्धालुओं की जानकारी और मार्गदर्शन के लिये विशेष व्यवस्था भी की गई है। सारा कार्यक्रम संपन्न करने के लिये सूरत में स्वागत समिति बन गई है। श्रीमान विमलजी पोद्दार अध्यक्ष नियुक्त किये गये हैं। श्री शबरीकुंभ समारोह समिति पूरे जोरशोर से व्यवस्था में जुटी हुई है।